(i) हड़प्पाई मुहर (विशिष्ट पुरावस्तु सेलखड़ी नामक पत्थर से निर्मित जानवरों के चित्र/लिपि उत्कीर्ण)

(ii) आवास

(iii) मृद्भाण्ड

(iv) आभूषण

(v) औजार

- ये वस्तुएँ **अफगानिस्तान, जम्मू, बलुचिस्तान, गुजरात** जैसी लम्बी दूरी के क्षेत्रों में भी मिली हैं।

- इस सभ्यता का नामकरण **हड़प्पा नामक स्थान** जहां पर संस्कृति पहली बार खोजी गयी थी, के नाम पर किया गया ।

- इस संस्कृति के पहले तथा बाद में भी संस्कृतियाँ अस्तित्व में थीं जिन्हें **आरम्भिक तथा परवर्ती हड़प्पा** कहा गया तथा हड़प्पा सभ्यता को **विकसित हड़प्पा संस्कृति** कहा गया।

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here

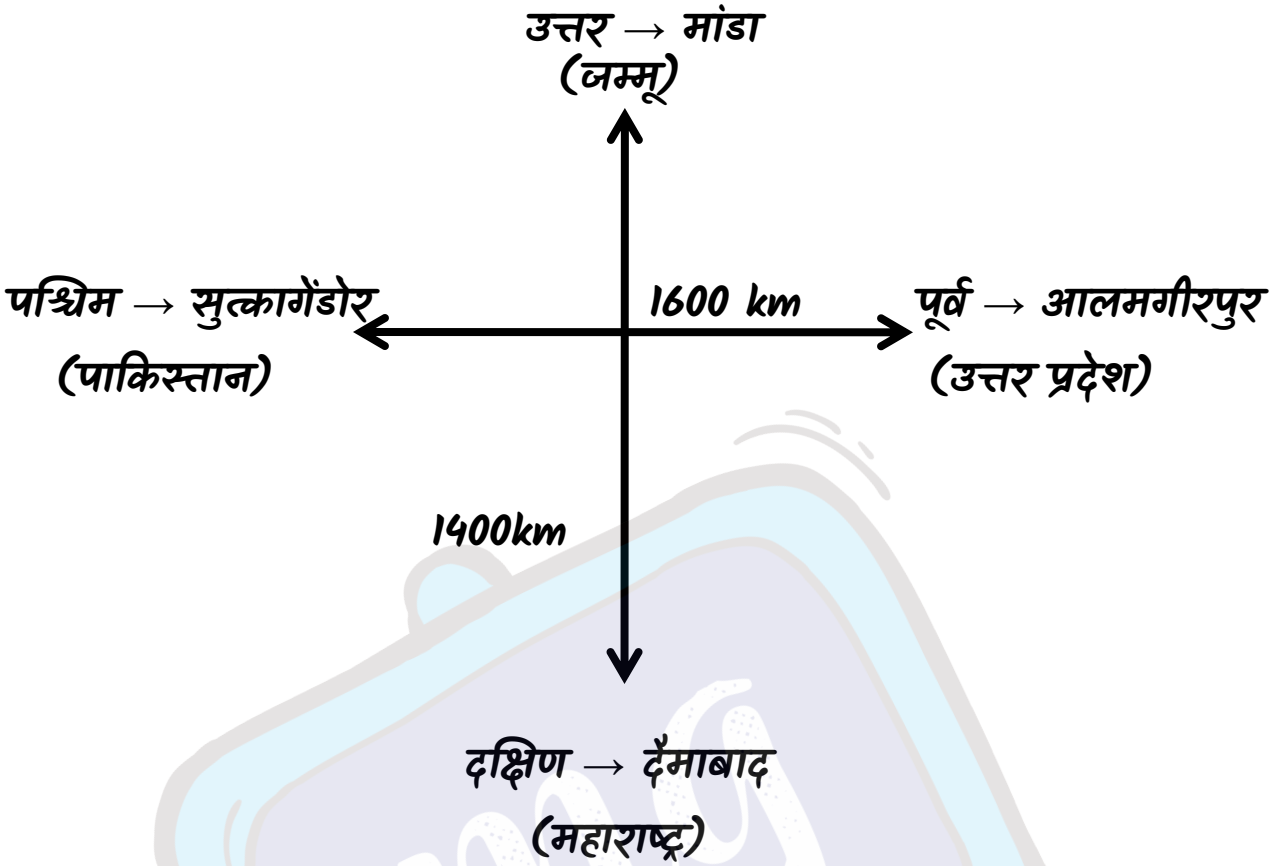

संस्कृति

•पुरावस्तुओं का ऐसा समूह जो एक विशिष्ट शैली के होते हैं और एक ही भौगोलिक क्षेत्र एवं एक ही कालखंड में पाये जाते हैं।
जैसे - मुहरें, मनकें, बांट, पत्थर के फलक, पकी हुई ईंटें।

•**हड़प्पा संस्कृति का काल निर्धारण** - 2600 ई. पूर्व से 1900 ई. पूर्व

•**निर्वाह के तरीके**

विकसित हड़प्पा संस्कृति में निर्वाह के तरीके

- कृषि
- पशुपालन
- शिल्पकारी

LET'S LEARN TOGETHER

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here

1. जले अनाज के दानों तथा बीजों से जानकारी -

- **भोजन** - पेड़-पौधों से प्राप्त उत्पाद ,जानवरों(मछली शामिल) गेहूं, जौ, दाल, सफेद चना तथा तिल बाजरे के दानें

✓**पुरावनस्पतिज्ञ** :- जो प्राचीन वनस्पति के अध्ययन के विशेषज्ञ होते हैं।

2. जानवरों की हड्डियों से जानकारी-

- **पालतू जानवर** : मवेशियों, भेड़, बकरी, भैंस और सुअर की हड्डियों से
- **जंगली प्रजातियां** : सुअर, हिरण, घड़ियाल ।

✓**पुरा प्राणी विज्ञानी/जीव पुरातत्वविद्** :- ये प्राचीन समय के जीवों का अध्ययन करते हैं ।

कृषि प्रौद्योगिकी

(i) मोहरों पर रेखांकन एवं मृण्मूर्तियां वृषभ (बैल) की जानकारी

(ii) चोलिस्तान एवं बनावली हरियाणा में मिट्टी के हल के प्रतिरूप

(iii) फसलों की कटाई के लिए लकड़ी के हत्थों में पत्थर के फलकों या धातु के औजारों का प्रयोग ।

(iv) कालीबंगा (राजस्थान) में जुते हुए खेत के साक्ष्य ।

LET'S LEARN TOGETHER

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here

(v) हड़प्पा स्थल अर्द्ध शुष्क - सिंचाई की आवश्यकता ।

शोर्तुघई (अफगानिस्तान) - नहरों के अवशेष

धौलावीरा (गुजरात) -जलाशयों का प्रयोग

पुरावस्तुओं की पहचान करना :

•अवतल चक्की

-मोहन जोदड़ों में अवतल चक्कियाँ बड़ी संख्या मे मिली हैं।

- अनाज पीसने तथा मसाले पीसने के काम में ।

-कठोर, कंकरीले, आग्निज या बलुआ पत्थर से निर्मित ।

-तल उत्तल । जमीन में गाड़ने में सहायक ।

-ये दो प्रकार की हैं :

(i) एक वह जिनमें एक छोटा पत्थर आगे-पीछे चलाकर अनाज पीसा जाता था ।

(ii) दूसरी वह जो मसाला कूटने के प्रयोग में ली जाती थी। इन्हें सालन पत्थर भी कहा गया है।

मोहनजोदड़ों (एक नियोजित शहरी केन्द्र) :-

-पहले बस्ती का नियोजन

-सबसे प्रसिद्ध पुरास्थल

LET'S LEARN TOGETHER

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here

-बस्ती दो भागों में विभाजित :

1. दुर्ग (पश्चिमी भाग) [छोटा लेकिन ऊंचाई पर बसा हुआ]

-संरचनाऐं कच्ची ईंटों के चबूतरे पर बनी।

-निचले शहर से अलग करने के लिए दीवार का घेरा।

2. निचला शहर (पूर्वीभाग)[बड़ा लेकिन नीचे बनाया गया]।

-भवन ऊँचे चबूतरों की नींव पर बने

-नियोजित जल निकास प्रणाली

-सड़कें व नालियां ग्रिड पद्धति से बनी एक दूसरे को समकोण पर काटना

दुर्ग : विशिष्ट सार्वजनिक प्रयोजनों की संरचनाएँ

(i) **मालगोदाम** :-

(ii) **विशाल स्नानागार** :-

गृह स्थापत्य :-

- निचले शहर में भवनों में बीच में आँगन था जिसके चारों ओर कमरे बने थे। संभवतः यह आँगन खाना खाना पकाने और कताई करने का केन्द्र था।
- लोग अपनी एकांतता को महत्व देते थे क्योंकि भूमितल की दीवारों में खिड़कियां नहीं हैं तथा मुख्य द्वार से आंतरिक भागों तथा आंगन का सीधा अवलोकन नहीं होता ।

LET'S LEARN TOGETHER

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here

सामाजिक भिन्नताओं का अवलोकनः-

(1) **शवाधान** : शवों का गर्तों में दफनाना

-गर्तों की बनावट भिन्न जो कि सामाजिक भिन्नता का संकेत ।

-कुछ कब्रों में मृद्भाण्ड तथा आभूषण मिलना जो संकेत देते हैं कि उनकी मान्यता रही हो कि ये मृत्योपरांत प्रयोग किये जा सकते हैं।

-कुछ शवाधानों में पुरूषों एवं महिलाओं दोनों में आभूषण मिले हैं ।

-मृतकों के तांबे के दर्पणों के साथ भी दफनाना

-राजकीय शवाधान बड़ी मात्रा में मिले हैं। जिनमें धन-सम्पत्ति भी दफनाई जाती थी

(2) **विलासिता की वस्तुएं** :

पुरावस्तुओं को दो भागों में वर्गीकृत

1.उपयोगी वस्तुएं : 2.विलास की वस्तुएँ :

शिल्प उत्पादन के विषय में जानकारीः

शिल्प कार्य : –

मनके बनाना, शंख की कटाई, धातुकर्म, मुहर निर्माण तथा बांट बनाना ।

LET'S LEARN TOGETHER

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here

I. **मनकें बनाना** :- मनकों का निर्माण विविध पदार्थों से होता था।

- कार्निलियन (सुंदर लाल रंग का)
- जेस्पर
- स्फटिक

"शैलखड़ी जैसे पत्थरों से तथा

- तांबा
- कांसा

-सोना जैसे धातुओं से

- शंख

-फयान्स

-पकी मिट्टी से

✓**मनकों के कई आकार** -

1. चक्राकार 2. बेलनाकार 3. गोलाकार
4. ढोलाकार 5. खण्डित

-इन मनकों को उत्कीर्णन या चित्रकारी से सजाया गया था।

-सेलखड़ी के चूर्ण के लेप को सांचे में ढालकर विविध आकारों के मनके बनाये जाते थे।

LET'S LEARN TOGETHER

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here

कार्निलियन का लाल रंग :-

पीले रंग के कच्चे माल तथा उत्पादन के विभिन्न चरणों में मनकों को पका कर प्राप्त किया जाता था।

-चन्हूदड़ों, लोथल तथा धौलावीरा में छेद करने के विशेष उपकरण मिलना।

2. शंख से बनी वस्तुएँ :-

चूड़िया, करछियां तथा पच्चीकारी की वस्तुएँ शंख से बनती थीं।

-नागेश्वर एवं बालाकोट समुद्र तट के समीप स्थित होने के कारण यह शंख निर्माण की वस्तुओं के प्रमुख केन्द्र थे।

उत्पादन केन्द्रों की पहचान

-शिल्प उत्पादन के केन्द्रों की पहचान पुरातत्वविद् कुछ चीजों को ढूंढकर करते हैं। जैसे -

i. जहां पर प्रस्तर पिंड, पूरे शंख, तांबा - अयस्क जैसा कच्चा माल मिला हो।

ii. औजार मिले हों।

iii. अपूर्ण वस्तुऐं हों।

iv. त्याग दिया गया माल और कूड़ा करकट मिला हो।

LET'S LEARN TOGETHER

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here

उपमहाद्वीप तथा उसके आगे से आने वाला माल

1. नागेश्वर एवं बालाकोट जहां शंख उपलब्ध थे, बस्तियां स्थापित
2. शोर्तुघई (अफगानिस्तान) कीमती नीले रंग के लाजमर्द मणि के स्त्रोत के निकट था।
3. लोथल
   (a) कार्निलियन के स्त्रोत (गुजरात में भरूच)
   (b) सेलखड़ी के स्त्रोत (द. राजस्थान तथा उत्तरी गुजरात)
   (c) धातु स्त्रोत (राजस्थान) के निकट था।
4. कच्चा माल प्राप्त करने के लिए राजस्थान में खेतड़ी से (ताँबा) तथा दक्षिण भारत (सोने के लिए) अभियान भेजकर संपर्क स्थापित करते थे ।

सुदुर क्षेत्रो से सम्पर्क :-

-अरब प्रायद्वीप के दक्षिण-पूर्वी छोर पर स्थित ओमान से
-मेसोपोटामिया से मेलुहा लोगों का संपर्क

मुहरें :-

मुहरों और मुद्रांकनों का प्रयोग लम्बी दूरी के संपर्कों को आसान बनाता था।

LET'S LEARN TOGETHER

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here

लिपि (रहस्यमय) :-

-हड़प्पाई मुहरों में एक पंक्ति में लिखा हुआ संभवतः मालिक के नाम व पद्वी को दर्शाता है।

-इस पर बना चित्र (आमतौर पर जानवर का) अनपढ़ लोगों को सांकेतिक रूप से इसका अर्थ बताता था।

-अधिकांश अभिलेख संक्षिप्त सबसे लंबे अभिलेख में 26 चिन्ह

- यह लिपि आज तक पढ़ी नहीं जा सकी है

-यह लिपि दाईं से बाईं ओर लिखी जाती होगी क्योंकि दाईं ओर चौड़ा अंतराल है तथा बाईं ओर यह संकुचित है।

लिखावटें :-

मुहरों पर, ताँबे के औजारों पर, मर्तबानों के अंवठ पर, तांबे व मिट्टी की आभूषणों तथा अस्थि छड़ों पर, एक प्राचीन सूचना पट्टे पर मिली । अतः साक्षरता व्यापक थी ।

बांट :-

•विनिमय बांटों की परिशुद्ध प्रणाली से नियंत्रित थे।

•बांट चर्ट नामक पत्थर से बनाये जाते थे

•घनाकार आकृति के होते थे।

LET'S LEARN TOGETHER

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here

•बांटों के निचले मानदंड द्विआधारी (1, 2, 4, 8, 16, 32 ... इत्यादि) थे। ऊपरी मानदंड दशमलव प्रणाली का अनुसरण

•छोटे बांटों का प्रयोग आभूषणों तथा मनकों को तौलने ने में

•धातु से बने तराजू के पलड़े भी मिले हैं।

सभ्यता मे परिवर्तन के कारण

✓जलवायु परिवर्तन • वनों की कटाई

✓अत्यधिक बाढ़

✓नदियों का सूख जाना

✓भूमि का अत्यधिक उपयोग

- मुहरों, लिपि, मनकों तथा मृदभाण्डों का लोप ।
- मानकीकृत बाँटों के स्थान पर स्थानीय बाँटों का प्रयोग ।
- शहरों के पतन तथा परित्याग ।

हड़प्पा सभ्यता की खोज :-

पुरातत्वविदों ने भौतिक अवशेषों से प्राप्त साक्ष्यों के माध्यम से इतिहास के अलग अलग अंशों को एक साथ जोड़ा है जिससे एक सभ्यता की खोज हुई

Download MISSION GYAN App Now from Play Store

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here

•हड़प्पा की खोज 1920 में **दयाराम साहनी** ने की

• खुदाई **सर जॉन मार्शल और कर्नल मेके** के मार्गदर्शन में की गई 1920 के दशक में पुरातत्वविद् दयाराम साहनी ने हड़प्पा में मुहरें खोज निकाली जो आरम्भिक ऐतिहासिक स्तरों से भी अधिक प्राचीन स्तरों से संबद्ध थी तभी राखालदास बनर्जी ने मोहनजोदड़ों से हड़प्पा जैसी मुहरें ही खोज निकाली।

•इन्हीं खोजों के आधार पर **1924** में भारतीय पुरातात्विक सर्वेक्षण के डायरेक्टर जनरल - **जॉन मार्शल** ने पूरे विश्व के समक्ष सिंधु घाटी में एक नवीन सभ्यता की खोज की घोषणा की।

•एस. एन. राव ने अपनी पुस्तक **'द स्टोरी ऑफ इंडियन आर्कियोलोजी'** में किया।

खोजों का वर्गीकरण :-

५ सिद्धांत

(i) प्रयुक्त पदार्थों द्वारा

(ii) उपयोगिता के आधार पर

(iii) अप्रत्यक्ष साक्ष्यों का सहारा

(iv) संदर्भों की रूपरेखाओं द्वारा

LET'S LEARN TOGETHER

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here

व्याख्या की समस्याऐं :-

सर्वाधिक समस्या धार्मिक प्रथाओं की व्याख्या

(i) मातृदेवी माँ की संज्ञा ।

(ii) मुहरों पर अनुष्ठान के दृश्य ,धार्मिक आस्थाओं से जोड़ना।

(iii) मुहरों पर पेड़ पौधों के चित्र उत्कीर्ण, प्रकृति पूजा के संकेत देना।

(iv) मुहरों पर एक सींग वाले जानवर - एकांगी का चित्र है कल्पित लगता है।

(v) मुहरों पर 'योगी' की मुद्रा की आकृति ' आद्य- शिव' की संज्ञा ।

(vi) पत्थर की शंक्वाकार वस्तुओं को लिंग कहा जाता है।

हड़प्पाई क्षेत्रों में पुरातात्विक कार्यों की उपलब्धि :-

1. हड़प्पाई अर्थव्यवस्था के बारे में हमारी जानकारी बेहतर है।
2. सामाजिक भिन्नताओं की गुत्थी सुलझाने में सफल हुए हैं।
3. सभ्यता की कार्यप्रणाली के बारे में जानकारी बढ़ी है।

****

LET'S LEARN TOGETHER